International Journal of Advances in Engineering and Management (IJAEM)
Volume 7, Issue 03 Mar. 2025, pp: 940-943 www.ijaem.net ISSN: 2395-5252

नाटक नाटक में विज्ञान : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

बिमला गोस्वामी (NET/JRF)
शोधार्थी, पं0 बद्रीदत्तपाण्डे परिसर, बागेश्वर, उत्तराखण्ड

Date of Submission: 20-03-2025 Date of Acceptance: 30-03-2025

शोध सारः–बालसाहित्य अकादमी से सम्मानितदेवेंद्रमेवाड़ी की रचना 'नाटकनाटकमेंविज्ञान' हिंदीसाहित्य की उस धारा का प्रतिनिधित्वकरतीहै, जिसमेंविज्ञान औरसाहित्य का सुंदरसमन्वय कियागयाहै। इस रचना के माध्यम से देवेंद्रमेवाड़ी ने विज्ञान की जटिलअवधारणाओँ कोसरल, सहजऔररोचकतरीके से प्रस्तुतकियाहै, ताकिपाठकविज्ञाननाकेवल समझेंबल्किउसेअपने जीवन का हिस्सामानें।

प्रारंभमेंलेखक ने माइक्रोस्कोप की खोजकोरेखांकितकरतेहुए यह बतायाहैकि, कैसे इस उपकरण ने वैज्ञानिकदुनियामें एक नईक्रांति का सूत्रपात किया, इससेपहलेसूक्ष्म जीवों की उपस्थितिऔर उनके जीवन के बारेमेंज्ञानसीमितथा, लेकिन इस आविष्कार ने विज्ञान की दृष्टिकोविस्तारदिया।इसकेबाद रुधिर का रहस्य औरआनुवांशिकविज्ञान का जन्मजैसेमहत्वपूर्णअवधारणाओंकोबड़ीसहजता से समझायागयाहै।रेडियो ऐक्टिविटी की खोजविज्ञान के क्षेत्र में एक अत्यंतमहत्वपूर्ण घटनाथी, जिसने न केवलचिकित्साऔरऊर्जा के क्षेत्र में नए आयाम खोले, बल्कि इसकेदुष्परिणामों से भीविज्ञानकोसावधानकिया। एक्स रे की खोजऔरइलेक्ट्रॉन के महत्वपूर्णआविष्कारकोभीसजीव रूपमेंप्रस्तुतकियागयाहै।लेखक ने इनसभीआविष्कारों के ऐतिहासिकऔरवैज्ञानिकपहलुओंकोहिंदीसाहित्य की शैलीमेंसहजता से समाहितकियाहै।इसकेबादलेखकमलेरियापरजीवियों के खोजकोवर्णितकरतेहैंजिसनेचिकित्साविज्ञानमेंनईदिशादीऔरमलेरियाजैसी घातकबिमारी के उपचार का मार्गप्रशस्तकिया।साथही, क्वांटमसिद्धांतऔरआपेक्षिता के सिद्धांतजैसेजटिलवैज्ञानिकअवधारणाओंकोउन्होंनेबहुतहीसरलऔरनाटकीय तरीके से प्रस्तुतकियाहै।प्रौद्योगिकीऔरजीवाश्मईंधन के पहले की दुनियातथापैट्रोलियम की खोज का वर्णनकरतेहुए लेखक ने यह स्पष्टकियाहैकिकैसेइन खोजों ने मानव जीवन कोबदलदिया। ऐसेहीभारत के गणितज्ञों का योगदानभीविशेषउल्लेखनीय है।प्राचीनकाल से लेकरआधुनिक समय तकभारत के महानगणितज्ञों ने जो योगदानदिया, उसने गणित औरविज्ञानको समृद्ध कियाहै।हमारेवायुमंडल के रहस्योंपरप्रकाशडालतेहुए लेखक ने इसके घटकोंऔर उनके प्रभावोंपरभी दृष्टिडालीहै।इसकेसाथहीसत्येंद्रनाथबसुऔरमेघनादसाहाजैसेमहानभारतीय वैज्ञानिकों के योगदान का भीविशदवर्णनकियागयाहै।हमारेदेवनहमारेजीवजंतु अध्याय मेंलेखक ने सुंदर प्रकृतिचित्रण कियाहै, जिसमें शकुंतला के द्वारा प्रकृति एवंपशु पक्षियोंकोअपनेप्राणों से भीअधिकप्रिय होने का वर्णनकियाहै।इसीप्रकारहमारीफसलेंमेंकिसानों एवंफसलों का वर्णनकियागयाहै, साथहीलोकगीतों का भीवर्णनहै। इस प्रकारदेवेंद्रमेवाड़ी की यह रचना न केवलविज्ञान के इतिहासऔरसिद्धांतोंकोसाहित्यिक रूपमेंप्रस्तुतकरतीहै, बल्किहिंदीसाहित्य मेंविज्ञान के प्रति एक नए दृष्टिकोणकोभीजन्मदेतीहै।

बीज शब्दः–माइक्रोस्कोप, रुधिर, आविष्कार, सूक्ष्मजीव, अनुवांशिक, रेडियो एक्टिविटी, वायुमंडल, प्रौद्यौगिकी, पैट्रोलियम, परजीवीआदि।

मूलआलेखः–माइक्रोस्कोपनाटकमें, देवेंद्रमेवाड़ी ने एक मनोरंजकऔरज्ञानवर्धकढंग से सूक्ष्मजीवों की दुनिया की रहस्यमयी यात्रा का वर्णनकियाहै। इसनाटक के शुरुआतमें, गार्गीऔरगौरवनामकपात्रों के माध्यम से सूक्ष्मजीवों की बात की जातीहै। ये दोनोंपात्र इस बातपरचर्चाकरतेहैंकिहमारेचारोंओर एक अदृश्य दुनियाबसीहुईहै, जिसेहमनग्नआंखों से नहीं देख सकते। यह संसार न केवलपेड़–पौधों या जानवरोंमें, बल्किहमारेचारोंओरऔरहमारे शरीर के भीतरभीविद्यमानहै।दोनों के बीच इस गंभीरऔरजिज्ञासाभरेसंवाद से पाठककोसूक्ष्मजीवों के अस्तित्व के प्रति एक गहरी रुचि औरउत्सुकताहोतीहै।

इसकेबादनाटकमें दृश्य बदलताहै, जहांलेखकपाठकोंको ऐतिहासिक घटना की ओरलेजातेहैं, जब एंटोनवानल्यूवेनहॉकऔर उनके साथीकिसीदुकानमें खड़ेहैं।ल्यूवेनहॉक, जोअपनीजिज्ञासाऔरआविष्कारशीलसोच के लिए प्रसिद्ध थे, अपनेसाथीको एक अद्भुत दृश्य दिखाने की तैयारीकरतेहैं।वहअपने एक साधारणदिखनेवालेलेंसकोपानी की कुछबूंदोंपरफोकसकरतेहैं, जैसेहीउनकासाथी इस लेंस के पार देखताहै, उसकीआंखों के सामने एक बिल्कुलनईदुनियाउभरआतीहै।उसनेजो देखा वहउसकेलिए अप्रत्याशितथाकृपानी की उन छोटी–छोटीबूंदोंमेंअनगिनतजीवाणुतैरतेहुए नजरआतेहैं, मानो वो किसीअन्य दुनिया के प्राणी हों।ल्यूवेनहॉक ने हर्षपूर्वकअपनेदोस्तकोबतायाकि यह वहीसूक्ष्मजीवहैं, जिनकीदुनियाअबतकअज्ञातथी।उसकेदोस्त की आँखोंमेंआश्चर्यऔरअविश्वासझलकताहै, क्योंकि वो इस तथ्य को समझने की कोशिशकरताहैकि एक साधारणसीदिखनेवालीपानी की बूंद के भीतरइतनीजटिलऔरविविध जीवनी शक्तिछिपीहोसकतीहै।

"एंटनः (दुकान मेंअपनेसाथी से) देखोदोस्त, मैंतुम्हेंवहदिखा सकताहूँ जोतुमआंख से नहीं देख सकते।

साथीः ये एंटनतुम्हारादिमागसहीहै।अरे, जोआंख से दिखताहैवही सब कुछहै।तुमऔरक्यादिखाओगे? हैं?

एंटनः यहांआओ, इस छड़ कोपकड़ोहां..... अबपानी की इस बूंदको इस लेंसमें से देखो.... क्यादिखाई दे रहाहै?

साथीः (डरते हुए) हेंहें... अरे ये क्याहैं एंटन। ये क्यादौड़ रहेहैं? ओफ! कितनेसारे! क्याहै ये? तुमक्यादिखा रहेहोमुझे एंटन?

एंटनः ये सूक्ष्म जंतुहैं! जंतु।हमारीतरहजीते–जागतेजंतु। समझे।"[1]

यह दृश्य न केवलवैज्ञानिक खोज की अद्भुत यात्रा कोउजागरकरताहै, बल्कि यह भीदर्शाताहैकिकिसप्रकार एक सामान्य व्यक्तिभीअपनीजिज्ञासाऔरअवलोकन शक्ति से विज्ञान की दुनियामेंक्रांतिलासकताहै।ल्यूवेनहॉक ने अपनेसाधारणउपकरण से महान खोज की, जिसनेमानवताकोसूक्ष्मजीवों के अस्तित्व के प्रतिजागरूककियाऔरविज्ञान की एक नई शाखा, सूक्ष्मजीवविज्ञान का आधारतैयारकिया।

लेखक ने इस संवादऔर दृश्य कोइतनीरोचकताऔरजीवंतता से प्रस्तुतकियाहैकिपाठकभी खुदको उस दृश्य का साक्षीमहसूसकरनेलगताहै। यह घटनाविज्ञान के इतिहासमें एक महत्वपूर्णमोड़ के रूपमेंसामनेआतीहै, जिसने न केवलचिकित्साविज्ञान, बल्किसमग्रविज्ञान के विकासमेंभीअहम योगदानदिया।मेवाड़ी ने इस घटना का साहित्यिकढंग से चित्रण कियाहै, जिससे यह केवल एक वैज्ञानिक घटना न होकर एक कहानी का रूपलेलेतीहै, जिसमें खोज, जिज्ञासाऔरआश्चर्य का भावसमाहितहै।

'रुधिर का रहस्य'नाटकमें, देवेंद्रमेवाड़ी ने विलियमहार्वे की महान खोज का नाटकीय रूपांतरणप्रस्तुतकियाहै, जोविज्ञानऔरसाहित्य के मेल का सुंदरउदाहरणहै। इसनाटकमेंलेखक ने हार्वे की रुधिर परिसंचरण की खोजको इस तरह से साहित्यिक रूपमेंढालाहैकि यह पाठक के मन–मस्तिष्कमें एक सजीवचित्र के रूपमेंउभरताहै।

International Journal of Advances in Engineering and Management (IJAEM)
Volume 7, Issue 03 Mar. 2025, pp: 940-943 www.ijaem.net ISSN: 2395-5252

नाटक के शुरुआतमें, एक गंभीरऔरजिज्ञासुविलियमहार्वेअपने अध्ययन कक्ष मेंचिंतनमग्नदिखाईदेतेहैं।वहमानव शरीर के जटिलतंत्र पर ध्यानकेंद्रितकरतेहुए एक बड़ेप्रश्न का समाधान खोजने की कोशिशकररहे हैं,क्यारक्त शरीर के भीतरनिरंतरप्रवाहकरताहै, या यह एक जगहस्थिररहताहै? हार्वे ने अपने समय के पारंपरिकविचारोंकोचुनौतीदेने का साहसदिखाया।फिरलेखक इस वैज्ञानिक खोजकोऔरअधिकनाटकीयताप्रदानकरतेहुए हार्वे के अनुभवों का चित्रण करतेहैं।हार्वेअपनेप्रयोगों के माध्यम से यह निष्कर्षनिकालतेहैंकिरक्तहृदय द्वारापंपकियाजाताहैऔरफिर धमनियों के माध्यम से शरीर के विभिन्नहिस्सोंमेंप्रवाहितहोताहै।

हार्वेजबअपनी खोज के निष्कर्षपरपहुँचतेहैं, तोलेखक उस क्षणकोअत्यधिकउत्साहऔरविजय के भावमेंढालतेहैं।हार्वेजोर से कहतेहैं,

"हार्वे:साथियों.... आपलोगोंकोआजमैंपहलीबारअपनी एक नई खोज के बारेमेंबतानेजारहाहूं।मैंजानताहूं की मेरीबातोंपरसहसाविश्वासकरनाकठिनहोगा, लेकिन यकीनमानिये–मैंनेबरसों की मेहनतऔरप्रयोगों से इस सच्चाई का पता लगायाहै।...सच्चाई यह हैकिहमारे शरीरमेंहमारारक्तलगातारचक्करलगाताहै... हृदय एक पंपहै।वहरक्तको धमकियों से पूरे शरीरमेंभेजताहै।शिराओं से रक्तवापसहृदय मेंलौटताहै।... औरहाँ, हमारारक्तदोतरह का नहींहोता। धमनियोंऔरशिराओंमेंहमारा एक हीतरह का रक्तबहताहै...."[2]

लेखक ने इस नाटकीय प्रस्तुतिकरण के माध्यम से विलियमहार्वे की वैज्ञानिकउपलब्धि कोकेवल एक शुष्कवैज्ञानिक घटना के रूपमें न प्रस्तुतकरके, उसे एक सजीवनाटकीय अनुभवमेंबदलदियाहै।इसमेंहार्वे के संघर्ष, जिज्ञासा, औरविजय के भावोंकोसाहित्यिकसौंदर्य के साथचित्रित कियागयाहै।हिंदीसाहित्य की विशेषता के अनुरूप, यह अध्याय पाठक के मनमेंवैज्ञानिक खोज की उस यात्रा कोसजीवकरदेताहै, जिसमेंनाटक, संवेदनाऔरविज्ञान का अद्भुतमिश्रणहै।

'अनुवांशिकीविज्ञान का जन्म' नाटक मेंदेवेंद्रमेवाड़ी ने ग्रेगरमेंडल की अनुवांशिकी के क्षेत्र में की गईक्रांतिकारी खोजकोनाटकीय रूपमेंप्रस्तुतकियाहै। इस नाटकमेंलेखक ने मेंडल के प्रयोगोंऔर उनके निष्कर्षोंको एक नाटकीय औरजीवंत दृश्य के रूपमेंरचाहै, जिससेपाठक न केवलविज्ञान की इस महत्वपूर्णअवधारणाको समझसकें, बल्किउसमेंगहराई से रुचि भीलेसकें।

लेखक ने इस खोज के क्षणकोअत्यधिकनाटकीयताऔरउत्साह के साथप्रस्तुतकियाहै।मेंडलगर्व से अपनेमाली से कहतेहैं,

"मेंडल: इनकाभीब्याहरचाऊंगा। देखें, इनके बीजों के पौधेलंबेहोतेहैं या बौने?

माली: फादर, आपनेतोविवाहकियानहीं,आपइनमटरों का ब्याहरचारहेहैं।(हंसकर) हें... हें... कहींपौधों का भीब्याहहोताहैफादर?

मेंडल: होताहै।तुमऔरमैंइनकाब्याहहीतोरचारहेहैं। ये जोमैं इस फूल का परागलेताहूं– ये दूल्हाहै।और इस फूलमेंपरागडालताहूं– ये दुल्हनहै। इनके जोबीजबनेंगे–वेइनकीसंतानेंहोंगे।ठीकहै, समझे कुछ ?"[3] इस नाटक के माध्यम से मेंडल ने यह सिद्ध कियाकिगुणों का विरासतीसंचरण एक सुसंगतनियम के आधारपरहोताहै। यह नाटकीय रूपांतरणहिंदीसाहित्य की परंपरामेंविज्ञानकोरोचकऔरसजीव रूपमेंप्रस्तुतकरताहै, जिससेपाठककेवलवैज्ञानिकतथ्योंकोहीनहीं समझते, बल्कि उनके पीछेछिपेसंघर्षऔरमानवजिज्ञासाकोभीमहसूसकरसकतेहैं।

रेडियोतरंगों की खोजमेंजगदीशचंद्रबसु का योगदान' विज्ञान के इतिहासमें एकमहत्वपूर्णनाटकहै।जगदीशचंद्रबोसभारतीय वैज्ञानिकोंमें से एक थेजिन्होंने न केवलरेडियोतरंगों के सिद्धांतोंको समझने मेंमहत्वपूर्णभूमिकानिभाई, बल्कि उनके प्रयोगोंऔरआविष्कारों ने विज्ञान की इस शाखा को समृद्ध किया। उनके योगदान का विशेषमहत्वइसलिए भीहैक्योंकिउन्होंनेपश्चिमीवैज्ञानिकसमुदाय के समक्ष भारतीय विज्ञान की योग्यताकोसाबितकिया।

"प्रोफेसरगुप्ता: सचबाततो ये हैबच्चोंकिरेडियोअर्थात 'बेतार' की खोजपहलेआचार्यजगदीशचंद्रबसु ने की।उन्होंनेसन् 1894 मेंहीअपनीप्रयोगशालामेंबेतार की तरंगेंबनालीथीं।सन् 1895 मेंउन्होंने उन तरंगों का सबके सामनेप्रदर्शनभीकिया।

मयंक: लेकिन, हमारीकिताबमेंलिखा है–बेतार की खोजमार्कोनी ने की।

जतिन: डॉक्टरलतिका, आपबताइयेगा।

डॉक्टरलतिका: हाँ मयंककिताबोंमें यहीलिखा हैक्योंकिआचार्यबसु के रेडियोतरंगों के उस प्रदर्शन के बादइटली के वैज्ञानिकगुगलिएल्मोमार्कोनी ने ये तरंगेंबनाईऔरइनसेसंदेशभेजने के प्रयोगकिए।"[4]

रेडियोतरंगों की खोजमेंजगदीशचंद्रबसु का योगदान न केवलवैज्ञानिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्णहै, बल्कि यह इस बात का प्रमाणभीहैकिभारतीय वैज्ञानिकपश्चिमीवैज्ञानिकों के समकक्ष खड़ेहोकरविज्ञानमें योगदानकरसकतेहैं।उन्होंनेभारतीय विज्ञानकोविश्वपटलपरस्थापितकियाऔररेडियोतरंगों के सिद्धांतको समझने औरविकसितकरनेमें एक अग्रणी भूमिकानिभाई।उनकीसोच, उनके आविष्कारऔरउनकीवैज्ञानिक दृष्टि ने रेडियोऔरवायरलेससंचार के क्षेत्र मेंक्रांतिलादी, जिससेमानवताकोसंवाद के नए साधनमिले।

एक्स–रे की खोज ने चिकित्साविज्ञानमें एक क्रांतिलादीऔरइसकाप्रभावअन्य सामाजिकऔरसांस्कृतिक क्षेत्रोंमेंभीमहसूसकियागया।हिंदीसाहित्य मेंविज्ञान के प्रति रुझान औरवैज्ञानिक खोजोंकोलेकरलेखकों ने भीअपनीरचनाओंमें इसे स्थानदियाहै।विशेषकरदेवेंद्रमेवाड़ीजैसेलेखकों ने विज्ञानकोसरलऔररोचकतरीके से प्रस्तुतकरतेहुए एक्स–रेजैसी खोजोंकोभीसाहित्य के माध्यम से आमजनतकपहुँचायाहै। एक्स–रे की खोज का श्रेय जर्मनभौतिकविद् विल्हेमकॉनराडरोएन्टजनकोजाताहै, जिन्होंने 1886 में इसे पहलीबार खोजा।

"रोन्टजन: ठीकप्रयोगकररहाहूँ बर्था।सोचोजराअगरकिसी की हड्डीटूटजाए तोमेरी इस खोज से बिनाचीरफाड़ के ही पता लगजाएगाकिहड्डीकहांटूटीहै।... बर्था, मैंनेनईकिरणों की खोजकरलीहै, एक्स–रे की ये मांस के भीतरहड्डियोंको देख सकतीहैं।...."[5]

'मलेरियापरजीवी की खोज'कोनाटक के रूपमेंप्रस्तुतकियागयाहै, जहाँ वैज्ञानिकसररोनाल्डरॉस की इस महत्वपूर्ण खोजकोनाटकीय ढंग से उभारागयाहै।नाटकमेंसररोनाल्डरॉसकोमच्छरोंऔरमलेरिया के परजीवियों के बीचसंबंध खोजने के प्रयासमेंचित्रित कियागयाहै।रॉस की भूमिका एक खोजीवैज्ञानिक के रूपमेंदिखाईजातीहै, जोलगातारप्रयोगोंऔरअवलोकनों के माध्यम से यह समझने की कोशिशकररहेहैंकिमलेरिया का कारणक्याहै।नाटकमें उनके मच्छरों के रक्त की जाँचकरने, उनके अंदरपरजीवी खोजनेऔरअंततः यह साबितकरने का दृश्य होताहैकिमलेरियामच्छरों द्वाराफैलताहै।

"उद्घोषक: इस तरहरोनाल्डरॉस ने पता लगायाकिमलेरिया के परजीवी या पैरासाइटमच्छर के पेटमेंपलतेऔर बढ़तेहैं।मच्छर की लारग्रंथि से वेफिरआदमी के शरीरमेंपहुँचजातेहैं।रॉसको इस खोज के लिए सन् 1902 मेंचिकित्सा के नोबेलपुरस्कार से सम्मानितकियागया।... लेकिनअभी यह जाननाबाकीथाकिक्यासभीमच्छरों के काटने से मलेरियाहोताहै?... इसका पता इटली के वैज्ञानिकगियोवानीबाटिस्टाग्रासी ने लगाया।"[6]

'क्वांटम की राहपर'कोनाटक के रूपमेंप्रस्तुतकियागयाहै, जहाँ वैज्ञानिकमैक्सप्लांकऔरअल्बर्टआइंस्टीनजैसेमहानवैज्ञानिकों की खोजोंकोकेंद्रमें रखा गयाहै।नाटकमेंप्लांक की क्वांटमसिद्धांत की खोजऔरआइंस्टीन के फोटोइलेक्ट्रिकप्रभावपरकामकोनाटकीय रूप से चित्रित कियागयाहै, जोपारंपरिकभौतिकीकोचुनौतीदेकर एक नईक्रांति की शुरुआतकरतेहैं।

'आपेक्षिकता का सिद्धांत'कोनाटकमेंगीतों के माध्यम से प्रस्तुतकियागयाहै, जहाँ अल्बर्टआइंस्टीन के इस महानसिद्धांतकोसरलऔरसंगीतमय रूपमें समझाने का

International Journal of Advances in Engineering and Management (IJAEM)
Volume 7, Issue 03 Mar. 2025, pp: 940-943 www.ijaem.net ISSN: 2395-5252

प्रयासकियागयाहै। इस नाटकमेंआइंस्टीन के सिद्धांतोंजैसे समय औरगति का संबंध, द्रव्यमानऔरऊर्जा का रूपांतरणकोगीतों के जरिए व्यक्तकियागयाहै।गीतोंमें समय, गति, औरगुरुत्वाकर्षणजैसीजटिलअवधारणाओंकोकल्पनाशीलताऔररचनात्मकता के साथसरलभाषामें समझायागयाहै, ताकिपाठकआसानी से इनसिद्धांतों की गहराईको समझसकें।गीतों के माध्यम से इस सिद्धांत की चर्चाऔरवैज्ञानिक खोज की प्रक्रियाकोरोचकबनाकरपेशकियागयाहै, जिससे यह नाटकपाठकों के लिए न केवलवैज्ञानिक दृष्टिकोण से बल्किसांस्कृतिक रूप से भीआकर्षकहोजाताहै।

"कोरसः बढ़ती गति से कद घटताहै।
घटताहीजाताहै,
मगरवजन बढ़ताहैगति से
बढ़ताहीजाताहै।
दिक् कालऔरद्रव्यमान सब परिवर्तितहोतेहैं,
मगरआपकीअपनीगतिपर
सब निर्भरकरते हैं।"[7]

'प्रौद्योगिकीऔरहम' नाटकमेंविभिन्नआविष्कारों के व्यावहारिक उपयोगऔर उनके समाजपरप्रभाव का वर्णनकियागयाहै। इस अध्याय मेंविशेष रूप से हवाईजहाजऔरडीजल इंजन के आविष्कारोंपरप्रकाश डाला गयाहै।हवाईजहाज के आविष्कार ने मानव के लिए आकाशमेंउड़ने की कल्पनाकोवास्तविकतामेंबदलदिया, जिससेपरिवहनऔरसंचार के क्षेत्र मेंक्रांतिआई।इसीतरह, डीजल इंजन के आविष्कार ने भारीमशीनरीऔरवाहनों के लिए एक सशक्त, ईंधन–कुशल शक्तिस्रोतप्रदानकिया, जिससेउद्योगऔर कृषिमेंबड़ेबदलावहुए।

'जीवाश्मईंधनऔरपेट्रोलियम' के आविष्कारपरजोरदियागयाहै, क्योंकि ये ऊर्जा के प्रमुख स्रोतरहेहैंऔरऔद्योगिकविकास के मूलमेंहैं। इस अध्याय मेंबतायागयाहैकिजीवाश्मईंधन, जैसेकोयला, प्राकृतिकगैसऔरपेट्रोलियम, करोड़ोंसालपहलेमरेहुए पौधोंऔरजीवों के अवशेषों से बनेहैं।इनकाउपयोगऊर्जाउत्पादन, परिवहन, औरउद्योगोंमेंव्यापक रूप से कियाजाताहै।

पेट्रोलियम की खोजऔरइसकापरिष्करण एक बड़ाआविष्कारसाबितहुआ, जिसनेआधुनिक युगमेंईंधनऔरऊर्जा की मांगकोपूराकिया।पेट्रोलियम से प्राप्तउत्पादजैसेपेट्रोल, डीजलऔरकेरोसिन ने परिवहन, उद्योगऔर घरेलूउपयोगोंमेंक्रांतिलादी।इसकेअलावा, पेट्रोकेमिकल्स का उपयोगरसायन, प्लास्टिकऔरअन्य उत्पादों के निर्माणमेंहोताहै, जिससेइसकामहत्वऔरभी बढ़ जाताहै।

"उद्घोषकः मनुष्य ने लाखोंवर्षों से धरती के भीतरछिपेजीवाश्मईंधन 'कोयले' को खोजडाला।उसनेइसकेअकूत खजानों का पता लगालियाकोयला घर के अंगीठी से भाप के इंजनोंतकपहुंचा।इसकीऊर्जा ने बड़ेपैमानेपरभापतैयार की औरभाप की ताकत ने रेलगाड़ियां चलादीं।भाप के इंजन मेंऔद्योगिकक्रांति के द्वार खोलदिए।इससेमोटरगाड़ियां भीचलाने के प्रयासकिए गए।... लेकिन यातायात के क्षेत्र मेंनईक्रांतिहुई– एक औरजीवाश्मईंधन 'पेट्रोलियम' या कच्चेतेलसे।इसनेआधुनिकऑटोमोबाइलउद्योग की नींव रखी।...."[8] इस प्रकार, जीवाश्मईंधनऔरपेट्रोलियम ने वैश्विकअर्थव्यवस्थाकोबदलदियाऔरआधुनिक जीवन शैली की नींव रखी, लेकिनइसकेसाथहीपर्यावरणीय चुनौतियाँ भीसामनेआईं, जोआज की प्रमुख चिंताओंमें शामिलहैं।

प्राचीनभारत के महानगणितज्ञआर्यभट्ट के जीवन और उनके योगदानको एक नाटकीय संवाद के माध्यम से प्रस्तुतकियागयाहै। इस नाटकीय संवादमेंआर्यभट्ट के अद्वितीय योगदानकोरोचकऔरसजीव रूपमेंप्रस्तुतकियागयाहै।शिष्य औरआचार्य के संवाद के माध्यम से आर्यभट्ट के गणित और खगोलशास्त्र मेंदिए गए योगदान, जैसे शून्य की खोज, पाई का सन्निकटमान, साइनऔरकोसाइन के सिद्धांत, पृथ्वी की धुरीपर घूमने की अवधारणा, ग्रहण की व्याख्या, औरसौरवर्ष की गणनाकोप्रभावीढंग से प्रस्तुतकियागयाहै। यह नाटक न केवलआर्यभट्ट की महानताकोदर्शाताहै, बल्किभारतीय विज्ञानऔर गणित के गौरवशालीइतिहासकोभीउजागरकरताहै।

"आचार्यः अतिसुंदर! हांवत्स, आर्यभट्टकोदशमलवप्रणाली का ज्ञानथा।उन्होंनेबड़ी संख्याओंकोसुगमता से लिखने के लिए इसकाउपयोगकिया।

एक शिष्यः मैंनेसुनाहैआचार्य की आर्यभट्ट ने अंकों के स्थानपर शब्दों का भीप्रयोगकियाहै? शब्दोंमेंभीउन्होंनेबड़ी संख्याएंलिखीं क्या यह सत्य है ?

आचार्यः सत्य हैवत्स।आर्यभट्ट ने संस्कृत की वर्णमाला के अक्षरोंको संख्या मानकरगणना की एक नईवर्णांकपद्धतिबनाई।....."[9]

'हमारावायुमंडल' नाटकमेंवायुमंडल की संरचना, उसकेविभिन्नस्तरोंऔरउसमेंमौजूदगैसों के महत्त्वपरचर्चा की गईहै।इसमेंबतायागयाहैकिवायुमंडलपृथ्वीकोढकनेवालीवहपरतहै, जो जीवन के लिए आवश्यक ऑक्सीजनप्रदानकरतीहैऔरसूर्य की हानिकारककिरणों से हमारी रक्षा करतीहै।इसकेसाथही, वायुमंडलमौसम, जलवायुऔरपृथ्वी के तापमानकोनियंत्रित करनेमेंभीमहत्वपूर्णभूमिकानिभाताहै। इस अध्याय कोविशेष रूप से सुमित्रानंदनपंत की कविता के साथजोड़ागयाहै, जिसमेंवायुमंडलऔर प्रकृति की सुंदरता का काव्यात्मकवर्णनकियागयाहै।पंत की कविताएँ प्रकृति के प्रति एक गहरीसंवेदनाऔरनिसर्ग की महिमा का अनुभवकरातीहैं।वायुमंडल के साथउनकीकविताओंकोमिलाकर यह दर्शायागयाहैकिवैज्ञानिकतथ्यों के साथ–साथसाहित्यिक दृष्टिकोण से भीवायुमंडलको समझा जासकताहै।

"शिक्षकः (हंसकर) बादल, बिजली, पानीकविताहीनहींविज्ञानभीहै।मुझे तोभईकविवरपंत की वेपंक्तियाँ अबभी यादहैं:
कभीहवामेंमहलबनाकर,
सेतुबांधकरकभीअपार
हमविलीनहोजातेसहसा
विभूतिही– से निसार !
मेधाः उनकी 'बादल' कविता से हैसर ये।"[10]

इस प्रकार, वायुमंडल के वैज्ञानिकमहत्वऔरकाव्यात्मकसौंदर्यकोसाथजोड़कर इस अध्याय कोप्रस्तुतकियागयाहै, जिससे यह अधिकरोचकऔरप्रभावशाली बन गयाहै।

'हमारेदेववन, हमारेजीवजन्तु' नाटकमें प्रकृतिऔरजीव–जंतुओं के संरक्षण की बातको शकुंतलाऔर दुष्यंत के पात्रों के माध्यम से प्रस्तुतकियागयाहै। यह नाटककालिदास की प्रसिद्ध कृति ''अभिज्ञानशाकुंतलं'' से प्रेरितहै, जहाँ शकुंतला का प्रेमऔरलगाववनऔर प्रकृति के प्रतिदर्शायागयाहै।नाटकमेंइनपात्रों के संवाद के माध्यम से पेड़ों, पशु–पक्षियोंऔरवन्य जीवन के महत्वपरजोरदियागयाहै।

"शकुन्तलाः ये सभीआश्रम के प्राणी हैं।आपइसका वध नहींकरसकते।
दुष्यंतः वध नहींकरसकते? क्यों?
शकुन्तलाः क्योंकि यह हमेंअपनेप्राणों से भीप्रिय हैं।"[11]

शकुंतलाऔर दुष्यंत का संवाद यह दर्शाताहैकिकैसेप्राचीनकालमेंभीवनऔरजीव–जंतुओं का संरक्षणमहत्वपूर्णमानाजाताथा।इसमेंआज के संदर्भमेंवर्तमानवनआंदोलनों, जैसेचिपकोआंदोलनऔर खेजडी आंदोलन, का भीउल्लेख कियागयाहै, जोवनोंऔरपर्यावरणकोबचाने के प्रयासहैं।

"अमृताः मैंप्राण दे दूंगी। खेजड़ीनहींकाटनेदूंगी।तुमम्हारेभाईहो। खेजडी काटदोगेतोगांवमेंसूखा पड़ जाएगा। मत काटोमेरे भाई।
(आवाजें हाँ हाँ मत काटो)
सैनिक–1: क्याराजासा का हुक्मनामानेंहम? हटजा।
अमृताः अरे, हमारेस्वामी जंबा जीमहाराज ने कहाहै–हरेपेड़ोंको मत काटो। ये पवित्र पेड़ हैं।
सैनिक–2: बहस मत कर।हटजा।
अमृताः तो खेजड़ीकाटने से पहलेतुम्हेंमुझे काटना पड़ेगा।"[12]

International Journal of Advances in Engineering and Management (IJAEM)
Volume 7, Issue 03 Mar. 2025, pp: 940-943 www.ijaem.net ISSN: 2395-5252

"मम्मी: हांबेटे। गढवाल के रैणी गांव की गौरादेवीऔरगांव की महिलाओं ने मिलकरठेकेदार के आदमियोंकोपेड़ नहींकाटनेदिए।वह पेड से लिपटगईथी।
प्रयास: इसीलिए इसे 'चिपको' कहागयाहोगा।
पापा: बेटे, यहीआंदोलनआगेचलकर 'चिपकोआंदोलन' बनाऔर रैणी गांव का नाम दुनियाभरमेंफैलगया।....."[13]

इस प्रकार, नाटक के माध्यम से प्राचीनऔरआधुनिक समय की पर्यावरणीय चिंताओंकोजोड़तेहुए प्रकृतिऔरवन्य जीवन के संरक्षण का संदेशदियागयाहै।

'हमारीफसलें' नाटकमेंकिसानोंकोअन्नदाता के रूपमेंप्रस्तुतकियागयाहै, जो धरती से अन्नउत्पन्नकरकेसमाज की खाद्य आवश्यकताओंकोपूराकरतेहैं।किसानों के इस महत्वपूर्ण योगदानकोरेखांकितकरने के लिए अध्याय मेंउन्हेंसम्मानऔरगौरव के साथचित्रित कियागयाहै।इसकेसाथही, किसानों की मेहनत, उनके संघर्षऔर उनके जीवन से जुड़ेपहलुओंकोभीउजागरकियागयाहै। अध्याय मेंलोकगीतों का भीउपयोगकियागयाहै, जोकिसानों की भावनाओं, उत्सवोंऔर कृषिकार्यों के प्रति उनके लगावकोदर्शातेहैं।इनलोकगीतों के माध्यम से ग्रामीण जीवन, खेतोंमेंकामकरने की परंपराएँ, औरफसलों के लहलहानेपरकिसानों की खुशीकोजीवंततरीके से प्रस्तुतकियागयाहै।
"मम्मी: लोकगीतगारहीहैंबेटे।तुमलोगबैठो, मैंभीतरचलतीहूं।
(बुंदेलखंड के एक ग्रामीण घरमेंमहिलाएंलोकगीतगारही हैं।)
मोरेराजाकंवरिया खोलो,
रस की बूंदेंपरीं।.....
असडा खेतीकरेंकिसान
बोईतिलीबिनोला धान
जुड़ीहोगईदोदोपान
सखीगावेंमंगलाचारहो,
रस की बूँदेंपरीं।...."[14] इस प्रकार, यह नाटककिसानोंको न केवलअन्नदाताबल्किसंस्कृति के संरक्षक के रूपमेंभीदर्शाताहै, और उनके जीवन से जुड़ेगीतोंऔरपरंपराओंकोप्रमुखतादेताहै।

'सत्येन्द्रनाथबसुऔरमेघनादसाहा' के योगदानको इस नाटकमेंविस्तार से वर्णितकियागयाहै, जहाँ उनके वैज्ञानिककार्योंऔर खोजों ने भारतीय विज्ञानको एक नईऊँचाईपरपहुँचाया।इनदोमहानवैज्ञानिकों ने भौतिकविज्ञानऔर खगोलविज्ञान के क्षेत्र में ऐसेअद्वितीय योगदानदिए हैं, जोआजभीविश्वविज्ञानमेंमान्य औरप्रभावशालीहैं।
इस नाटकमेंसत्येन्द्रनाथबोस की प्रतिभाऔर उनके शोध कार्योंको उनके जीवन के संघर्षऔरकड़ीमेहनत के संदर्भमेंप्रस्तुतकियागयाहै। एक साधारणप्रोफेसर से लेकरविश्वप्रसिद्ध वैज्ञानिकबननेतक की उनकी यात्रा दर्शाईगईहै।साथही, इस नाटकमें उनके उन संघर्षोंकोभीउजागरकियागयाहै, जबउन्होंनेबिनाकिसीसंसाधन या मदद के अपने शोध कार्यकोआगे बढ़ाया।
"पापा: सुबोध जी, मैंकईबारसोचताहूं, वहकितनाकठिन समय था।प्रथमविश्वयुद्ध छिड़ चुकाथा।भौतिकविज्ञान की नईऔरअच्छीपुस्तकेंमिलनामुश्किलहोचुकाथा।लेकिनसत्येंद्रनाथऔरसाहा ने हारनहींमानी।
सुबोध: आपकीबातसहीहै।उन्होंनेजर्मनभाषासीखकरअच्छीकिताबेंपढ़ी औरजबतमामशिक्षकदेशभरमेंपुरानीपरंपरागतभौतिकीपढ़ा रहेथे, तबउन्होंनेआपेक्षिता, क्वांटमसिद्धांतऔरबोर का हाइड्रोजनस्पेक्ट्रमसिद्धांतजैसीनवीनतमभौतिकी का अध्ययन किया।उसेविद्यार्थियोंकोपढ़ाया।
पापा: तभीतोकोलकाता का यूनिवर्सिटीकॉलेजऑफसाइन्स उस समय भौतिकी के अध्ययन का सर्वोत्तमकॉलेजमानाजाताथा।
सुबोध: सत्येंद्रनाथबसुऔरमेघनादसाहा ने अपना शोध कार्य शुरू किया।पहला शोधपत्र उन दोनों ने मिलकरलिखा औरलंदन की प्रसिद्ध पत्रिका द फिलॉसोफिकलमैगजीनमें छपने के लिए भेजदिया। यह सन् 1918 की बातहै....."[15]मेघनादसाहा ने विज्ञान के क्षेत्र में न केवल शोध कार्यकिए, बल्किवैज्ञानिकसंस्थाओंऔरप्रयोगशालाओं के विकासमेंभीमहत्वपूर्ण योगदानदिया।वेविज्ञानकोजनतातकपहुँचानेऔरवैज्ञानिक दृष्टिकोणको बढ़ावादेने के पक्षधरथे।नाटकमेंमेघनादसाहा की इस सोचऔर उनके वैज्ञानिक योगदानोंको उनके व्यक्तिगत जीवन औरसंघर्षों के संदर्भमेंदर्शायागयाहै।

निश्कर्श:– देवेंद्रमेवाड़ी की रचना ''नाटक–नाटकमेंविज्ञान'' न केवलविज्ञानकोसाहित्यिक रूपमेंप्रस्तुतकरने का एक सशक्त माध्यम है, बल्कि यह हिंदीसाहित्य में एक महत्वपूर्ण योगदानभीकरतीहै। इस रचना के माध्यम से विज्ञान की जटिलअवधारणाओंऔर खोजोंकोनाटकीय शैलीमेंप्रस्तुतकियागयाहै, जिससेहिंदीसाहित्य मेंविज्ञानऔरतकनीक का एक नयाआयामजुड़ताहै।
इस नाटकमेंवैज्ञानिकतथ्योंकोसाहित्यिकढंग से व्यक्तकरउन्हेंअधिकरोचकऔरसजीवबनादियागयाहै।विज्ञानको समझाने के लिए संवाद, गीत, औरनाटकीय रूपांतरण का उपयोगकरके इसे आमजनता के लिए सुलभबनायागयाहै।साहित्य औरविज्ञान का यह संगमदर्शाताहैकिकैसेहिंदीसाहित्य सामाजिकऔरवैज्ञानिकविषयोंको एक नए परिप्रेक्ष्य से प्रस्तुतकरसकताहै।
विशेष रूप से, इस रचनामेंआर्यभट्ट, भास्कराचार्य, सत्येन्द्रनाथबसु, मेघनादसाहाजैसेभारतीय वैज्ञानिकों के योगदानकोसाहित्यिकमंचपरलाकरउनकीउपलब्धियोंकोजीवंतकियागया है। यह हिंदीसाहित्य मेंविज्ञान के महत्त्वको बढ़ाने का प्रयासहै, जोपाठकोंकोविज्ञान की गहराईऔरउसकीप्रासंगिकता से परिचितकराताहै।इसकेसाथही, प्रकृति, पर्यावरण, औरवन्यजीवन के संरक्षणजैसेआधुनिकविषयोंपरभीरचनामेंगहनचिंतनकियागयाहै, जोआज के समय मेंअत्यधिकप्रासंगिकहै।
यह रचनाविज्ञानऔरसाहित्य के बीच की दूरीको कम करतीहैऔरहिंदीसाहित्य को एक नईदिशाप्रदानकरतीहै।साहित्य के माध्यम से विज्ञान का प्रसारकरनाऔरउसकीजटिलताओंकोसरलबनाना, इसे जनसाधारणतकपहुँचाने का एक प्रभावीतरीकाहै।
अत:, यह कहाजासकताहैकिदेवेंद्रमेवाड़ी की यह रचनाहिंदीसाहित्य मेंविज्ञान के प्रसार के लिए एक अनूठाऔरप्रभावशाली योगदानहै। यह न केवलपाठकोंमेंविज्ञान के प्रतिजिज्ञासाउत्पन्नकरतीहै, बल्किउन्हेंवैज्ञानिक दृष्टिकोण से सोचनेऔर समझने की प्रेरणाभीदेतीहै। इस प्रकार, यह रचनाहिंदीसाहित्य कोविज्ञान की दिशामें एक नईऔरमहत्वपूर्णदिशादेतीहै, जिससेभविष्य मेंऔरअधिकरचनाएँ प्रेरितहोसकतीहैं।

संदर्भ :–

1)मेवाड़ीदेवेन्द्र, नाटकनाटकमेंविज्ञान, विज्ञानप्रसार, विज्ञान एवंप्रौद्योगिकीविभाग के अंतर्गत एक स्वायत्तसंस्थान, 2017, पृ०सं० 04
2) वही, पृ०सं० 15
3) वही, पृ०सं० 21
4) वही, पृ०सं० 31
5) वही, पृ०सं० 46
6) वही, पृ०सं० 75
7) वही, पृ०सं० 96
8) वही, पृ०सं० 133
9) वही, पृ०सं० 144
10) वही, पृ०सं० 171
11) वही, पृ०सं० 188–189
12) वही, पृ०सं० 191
13) वही, पृ०सं० 192
14) वही, पृ०सं० 199
15) वही, पृ०सं० 229